अदरक की उन्नतशील खेती

अजीत कुमार श्रीवास्तव
महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केन्द्र, चौकमाफी, पीपीगंज, गोरखपुर – 273 165, उ.प्र., भारत
ईमेल: ajiticar@gmail.com

अदरक एक प्रमुख नकदी फसल है, जिसे विभिन्न क्षेत्रों में अलग–अलग नामों से जाना जाता है। भारत में उगाई जाने वाली अदरक की गुणवत्ता विश्व में सर्वोत्तम मानी जाती है। अदरक एक बहुवर्षीय पौधा है। इसका उपयोग मसाले, औषधि और ताजी सब्जी के रूप में किया जाता है। अदरक का सेवन रक्त कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित रखने, सर्दी–खांसी और बदहजमी में लाभकारी होता है। अदरक की खेती के लिए बलुई दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त होती है, जिसमें पीएच मान 6.5 से 7.0 के बीच हो। इसकी खेती के लिए खेत की अच्छी तैयारी, खाद और उर्वरकों का संतुलित उपयोग और निराई–गुड़ाई महत्वपूर्ण होती है। अदरक की बुवाई का सबसे उपयुक्त समय अप्रैल–मई होता है। बुवाई के बाद सिंचाई, मिट्टी चढ़ाना और मल्चिंग से फसल की वृद्धि अच्छी होती है। अदरक की फसल 7–8 महीनों में तैयार हो जाती है और उचित देखभाल से प्रति हेक्टेयर 180 से 200 कुंतल तक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।

परिचय

अदरक एक मुख्य व्यवसायिक नगदी फसल है जिसको क्षेत्र एवं भाषा अनुसार विभिन्न प्रचलित नामों से जाना जाता है। अदरक को शुद्ध फसल के रूप में तथा छायादार स्थानों पर बागवानी वृक्षों के साथ उगाया जा सकता है भारत में उगाई जाने वाली अदरक की गुणवत्ता विश्व में सर्वोत्तम मानी जाती है। भारत में सबसे अच्छी अदरक केरल राज्य में पैदा की जाती है जिसको अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में ''कोचीन जिंजर'' के नाम से जाना जाता है। अदरक एक बहुवर्षीय पौधा है इसका वानस्पतिक नाम *जिंजीबर आफीसिनेल रोज* है तथा यह जिंजीबेरेएसी कुल की सदस्य है।

उपयोग एवं महत्व

अदरक एक ऐसी औषधि एवं मसाला फसल है जो कि भारत के प्रत्येक घर में प्रयुक्त होती है। उपयोग के साथ–साथ अदरक उत्पादन में भी भारत का विश्व में प्रमुख स्थान है तथा एक अनुमान के अनुसार विश्व की लगभग 50 प्रतिशत अदरक का उत्पादन भारत में ही होता है। अदरक का प्रयोग प्राचीन काल से ही मसाले, सब्जी और औषधि के रूप में प्रयोग हो रहा है। इसके प्रयोग से शरीर में रक्त कोलेस्ट्रॉल का स्तर नियंत्रित रहता है। शीतकाल में अदरक का प्रयोग चाय में मुख्य रूप से किया जाता है। इसका प्रयोग बदहजमी, सर्दी, जुकाम, खांसी में फायदेमंद रहता है।

भूमि

सामान्यतः सभी प्रकार की भूमियों में इसकी खेती की जा सकती है। लेकिन उचित जल निकास वाली बलुई दोमट मिट्टी जिसमें जीवांश की अच्छी मात्रा हो, अदरक की खेती लिए उपयुक्त होती है। इसकी अच्छी पैदावार के लिए भूमि का पीएच मान 6.5 से 7.0 के बीच होना चाहिए।

खेत की तैयारी

खेत की तैयारी करने के लिए 1–2 जुताई मिट्टी पलटने वाले हल और 2–3 जुताई देशी हल से करनी चाहिए। मिट्टी को अच्छी तरह से समतल व भुरभुरी कर लेना चाहिए। इसी बीच प्रति एकड़ 100 से 150 किलोग्राम नीम की पिसी हुई खली खेत में मिला देनी चाहिए जिससे सूत्रक्रमियों से सुरक्षा की जा सके।

खाद एवं उर्वरक

अदरक की फसल को अधिक मात्रा में पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है जिसके लिए 25 से 30 टन गोबर की खाद तथा 100 किलोग्राम नत्रजन, 50 किलोग्राम फॉस्फोरस व 50 किलोग्राम पोटाश की मात्रा प्रति हेक्टेयर की दर से भूमि में प्रयोग करते हैं। गोबर की खाद के अलावा नत्रजन की आधी मात्रा (50 किलोग्राम) फॉस्फोरस व पोटाश की सम्पूर्ण मात्रा बुवाई के समय खेत में मिला देते हैं। नत्रजन की शेष आधी मात्रा में से आधी (25 किलोग्राम) बुवाई के 35 से 40 दिन बाद पौधों पर मिट्टी चढ़ाते समय व शेष बची (25 किलोग्राम) मात्रा बुवाई के 75 से 90 दिन पश्चात् खड़ी फसल में देते हैं।

प्रमुख किस्में

रजता, सुप्रभा, सुरभि, हिमगिरि, महिमा, समस्तीपुर एवं बरुआसागर

बुवाई का समय

अदरक की बुवाई का सबसे उपयुक्त समय मध्य अप्रैल से मई तक अच्छा माना जाता है। जिन क्षेत्रों में सिंचाई की उपयुक्त सुविधा हो वहां भी अदरक की बुवाई अप्रैल से जून के बीच कर सकते हैं।

बीज उपचार एवं बुवाई की विधि

बुवाई हेतु उन्नतशील किस्म के स्वस्थ एवं रोग रहित प्रकंद का प्रयोग करना चाहिए। प्रकंद को इस प्रकार चाकू से काटें कि उसमें दो से तीन आँखें अवश्य रहें। कटे हुए टुकड़ों को कुछ देर तक हवा में खुला छोड़ दें ऐसा करने से कटे हुए भाग पर पपड़ी जम जाती है जिससे कंद के सड़ने की संभावना नहीं रहती है। बुवाई से पूर्व कटे हुए प्रकन्दों को कॉपर ऑक्सिक्लोराइड के 0.3 प्रतिशत या डायथेन एम–45 के 0.2 प्रतिशत घोल में 15 मिनट तक डुबोकर छाया में सुखा लेते हैं। अदरक की बुवाई मेड़ों पर या समतल क्यारियों में की जाती है। समतल भूमि में पंक्ति से पंक्ति की दूरी 30 सेंटीमीटर व कंद से कंद की दूरी 20 सेंटीमीटर रखते हैं जब कि मेडों पर बुवाई पंक्ति से पंक्ति की दूरी 45 सेंटीमीटर व कंद से कंद की दूरी 30 सेंटीमीटर रखते हुए की जाती है। प्रकंदों को 5 से 6 सेंटीमीटर की गहराई में बोया जाता है तथा बुवाई के उपरान्त ऊपर से मिट्टी चढ़ा दी जाती है। अदरक की बुवाई मेड़ों पर करने से उपज अधिक मिलती है।

बीज की मात्रा

अदरक की बुवाई हेतु कंदो के आकार के अनुसार 15–20 कुन्तल/हेक्टेयर बीज की आवश्यकता होती है।

बिछावन या मल्चिंग

अदरक की खेती के लिए दो बिछावन लाभप्रद होते हैं प्रथम बिछावन हरी पत्तियों या घास–फूस की पतली परत बिछाकर बुवाई के तुरंत बाद तथा द्वितीय बिछावन गोबर की खाद की पतली परत बिछाकर बुवाई के 35 से 40 दिन बाद करने से फसल की बढ़वार अच्छी होती है तथा खेत में खरपतवार का जमाव भी कम होता है और मृदा में पर्याप्त नमी संरक्षण भी होता है। इसके अलावा बिछावन के सड़ने से खेत में जीवांश पदार्थ की मात्रा बढ़ती है जिससे प्रति इकाई क्षेत्र से अधिक उत्पादन प्राप्त होता है।

सिंचाई

बुवाई के तुरंत बाद सिंचाई करना आवश्यक है। जब अदरक की फसल को वर्षा ऋतु में लिया जाता है तो उस दौरान सिंचाई की विशेष आवश्यकता नहीं होती है परंतु अप्रैल–मई में बोई गई अदरक की फसल में वर्षा होने से पूर्व दो से तीन सिंचाईयों की आवश्यकता होती है। अदरक में बुवाई के 80 से 90 दिन बाद प्रकंद बनना शुरू हो जाते हैं। प्रकंदो के पूर्ण विकास के दौरान खेत में पर्याप्त मात्रा में नमी बनी रहनी चाहिए।

निराई–गुड़ाई एवं मिट्टी चढ़ाना

अदरक की फसल में जुलाई से सितंबर के मध्य प्रति माह एक से दो निराई–गुड़ाई करना आवश्यक होता है तथा साथ ही साथ पौधों पर मिट्टी भी चढ़ाना चाहिए।

खुदाई

बुवाई के लगभग 7 से 8 माह बाद अदरक की फसल खुदाई हेतु तैयार हो जाती है। जब दिसम्बर – जनवरी माह में पौधों की पत्तियाँ पीली पड़कर जमीन पर गिरने लगे तो यह समझना चाहिए कि फसल खुदाई हेतु तैयार है। प्रकंदों की खुदाई करने के पश्चात् गाठों को पानी में धोकर 1 से 2 दिन तक छाया में सुखाना आवश्यक होता है।

पैदावार

बुवाई के 7–8 महीने बाद फसल खुदाई के लिए तैयार होती है। अदरक की फसल की अच्छी तरह सिंचाई, निराई एवं देखभाल समय–समय पर की जाए तो 180–200 कुंतल/हेक्टेयर तक पैदावार ली जा सकती है।

निष्कर्ष

अदरक एक महत्वपूर्ण व्यवसायिक नगदी फसल है, जो भारत में बड़े पैमाने पर उगाई जाती है तथा जिसकी गुणवत्ता विश्व स्तर पर प्रशंसित है। यह फसल न केवल मसाले के रूप में बल्कि औषधीय गुणों के लिए भी महत्वपूर्ण है। इसका प्रयोग बदहजमी, सर्दी, खांसी, और रक्त कोलेस्ट्रॉल नियंत्रित करने में सहायक है। अदरक की खेती के लिए उचित जल निकासी वाली बलुई दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त मानी जाती है, जिसमें पीएच मान 6.5–7.0 के बीच हो। खेत की सही तैयारी, उर्वरकों और खाद का सही अनुपात में उपयोग और समय–समय पर सिंचाई और निराई–गुड़ाई से फसल की वृद्धि और पैदावार बेहतर होती है। इसके लिए प्रमुख प्रजातियों का चयन और बुवाई की सही विधि अपनाना आवश्यक है।